॥ जय नानेश ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय रामेश ॥

श्रुत आराधक

भाग-1

: प्रकाशक :
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

पुस्तक : **श्रुत आराधक भाग-1**

संस्करण : प्रथम-वर्ष 2015 (2000 प्रतियाँ)
द्वितीय-वर्ष 2016 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रुपये 10/-

प्रकाशक : श्री अ.भा.सा. जैन संघ

पुस्तक प्राप्ति स्थान : **प्रधान कार्यालय**
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन: 0151-2270261
Email- absjsbkn@yahoo.co.in

: **धार्मिक एवं शैक्षणिक केन्द्र**
आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र
राणा प्रतापनगर रोड, सुन्दरवास, उदयपुर-313001 (राज.)
फोन: 0294-2490717, 2490306
Email- asndkudaipur@gmail.com

: **श्री अर्पित जी मरलेचा, चैन्नई (तमिलनाडु)**
मो.: 09940332244

आचार्य श्री नानेश जन्म शताब्दी महोत्सव वर्ष 2020 (पूर्व तैयारी)

प्रथम चरण - श्रुत आराधक
तमसो मा ज्योतिर्गमय

भगवान महावीर ने मोक्ष के लिए जो मार्ग बताये वे हैं- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र।

सम्यक् दर्शन, यह विचारधारा का रूप है, उसी के आधार पर यह बोध होता है कि मुझे अपने शुद्ध स्वरूप को प्रकट करना है। ज्ञान का यह स्तर सम्यक् दर्शन से प्रकट होता है। जब तक सम्यक् ज्ञान पैदा नहीं होता, तब तक जीव-अजीव का ज्ञान नहीं होता। सामान्य विचार सम्यक् दर्शन के माध्यम से पैना होगा और जब सम्यक् दर्शन पैना होता है तो व्यक्ति के मन में तीव्र भावना जगती है कि मैं शुद्ध आत्म-स्वरूप को प्राप्त करूँ। आत्मा में शुद्ध रूप प्रकट होना और सदा-सदा के लिए उसमें अवस्थित होना, यही मोक्ष है। इन विचारों की तीव्रता सम्यक् दर्शन से प्रकट होती है, मुक्ति प्राप्त करने के लिए इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाये, इसे प्राप्त करने के लिए किस रास्ते पर चलना है, कौन-कौन से उपाय करने हैं इस प्रकार के जो भी प्रयोग होते हैं, उसे सम्यक् ज्ञान कहा गया है।

एक अज्ञानी भी महान ज्ञानी बन सकता है, किन्तु सम्यक् ज्ञान होना विशेष महत्व रखता है। सम्यक् ज्ञान प्रकट हुए बिना आत्मा सही निर्णय करने में असमर्थ होती है। सम्यक् ज्ञान होने पर वह सम्यक् दर्शन का निर्णायक बन पाता है और फिर मुक्ति की आराधना कर सकता है। सम्यक् ज्ञान के बिना जीव अनादिकाल से

इस संसार में परिभ्रमण करता रहा है। कई योनियां भोगता है। कभी मनुष्य तो कभी देव, कभी नैरयिक और कभी तिर्यंच ऐसी विभिन्न योनियों में भटकता जाता है। वह भी एक बार नहीं अनेक बार.....। कितनी ही बार हम मनुष्य बन चुके हैं और कितनी ही बार हम पशु के रूप जन्म ले चुके हैं। अनेक बार हमने इन घाटियों को लांघने का प्रयत्न किया है किन्तु सम्यक् विचार, सम्यक ज्ञान प्रकट नहीं होने से हम थपेड़े खाते रहे, संघर्ष करते रहे। हमने कभी सोचा ही नहीं कि आत्मा का भी अस्तित्व होता है। जब तक सम्यक ज्ञान का सूर्य प्रकट नहीं होता तब तक संसार में भटकना निश्चित है। सम्यक् ज्ञान और दर्शन प्रकट होने के बाद विचारधारा बदलती है और उसके अनुरूप शुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है। धीरे-धीरे ज्ञान बढ़ता रहता है। जब आत्मा को ज्ञात होता है कि वह अनादिकाल से अनंत बार जन्म-मरण के चक्कर में फंसा है, उलझा है फिर वह उससे निकलने का प्रयास करता है। लेकिन ऐसा अनुभव तभी होगा जब हम औपचारिक शिक्षा से भिन्न सम्यक् एवं उद्देश्ययुक्त शिक्षा की ओर मन को ले जाएंगे।

कॉलेज के छात्र रोजी रोटी कमाने, अच्छी तरह से जीवन जीने को ही शिक्षा का लक्ष्य मानते हैं। रोजी-रोटी कमाने का लक्ष्य होना अच्छी बात है। लेकिन वह लक्ष्य थोड़ी सी आर्थिक सम्पन्नता होने पर पूरा हो जाता है। लक्ष्य की पूर्णता तभी है जब वह लक्ष्य मोक्षगामी हो।

शास्त्रों में कहा गया है पढमं नाणं तओ दया। पहले ज्ञान और फिर उसके बाद आचरण। श्रावक को जीव अजीव का ज्ञाता होना चाहिए। किसी भी चीज का ज्ञान होने से करणीय व अकरणीय का भान होता है, फिर श्रावक उस दिशा में आगे बढ़ता है। आचार्य श्री रामेश अक्सर अपने प्रवचनों में फरमाते हैं कि पुराने श्रावक थोकड़ों, शास्त्रों के ज्ञाता होते थे, वे श्रावक वर्ग के साथ ही साधु-संतों को भी अध्ययन करवाते थे, जिनमें जयपुर के स्व. श्री मोहनलालजी मूथा जैसे कई मूर्धन्य श्रावकों का नाम आचार्य श्री जी

के प्रवचनों में कई बार दोहराया जाता रहा है। पूज्य आचार्य श्री रामेश का फरमाना रहा है कि श्रावक अगर ज्ञान सम्पन्न, दर्शन सम्पन्न, चारित्र सम्पन्न होगा तो उस संघ-समाज का विकास होते देर नहीं लगेगी।

आचार्य श्री रामेश का यही आव्हान है कि हर श्रावक-श्राविका ज्ञानवान बने, क्रियावान बने, इसी उद्देश्य को लेकर ज्ञान-ध्यान की रूचि को आगे बढ़ाने के लिए एक अभिनव योजना श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा जन-जन के लिए श्रुत आराधक के रूप में प्रस्तुत की जा रही है।

महापुरुषों के सिर्फ गुणगान ही नहीं अपितु उनके संकेतों को समझकर अगर उस दिशा में हमारा कदम बढ़ता है, तो महापुरुषों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा, भक्ति और समर्पणा होगी।

सन् 2020 पूज्य आचार्य स्व. श्री नानालाल जी म.सा. की जन्म शताब्दी वर्ष (CENTENARY YEAR) के रूप में मनाया जा रहा है। उसी कड़ी में पहले प्रकल्प के रूप में श्रुत आराधक की योजना का क्रियान्वयन श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा किया गया है। इसका लक्ष्य होगा आचार्य श्री नानेश शताब्दी तक अच्छे ज्ञान ध्यान वाले श्रावक वर्ग को तैयार करना। इसके लिए पंचवर्षीय श्रुत आराधक पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

पुस्तक के संकलन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिनका मार्गदर्शन एवं सहयोग मिला, उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक के संकलन संपादन में पूरी तरह सावधानी बरती गयी है। इसके उपरान्त भी कोई त्रुटि रह गई हो तो हम क्षमाप्रार्थी हैं। सुज्ञ पाठक सुधारकर ज्ञानार्जन में वृद्धि करेंगे, ऐसी आशा है।

विनीत:

संयोजक, पंचवर्षीय श्रुत आराधक पाठ्यक्रम

अनुक्रमणिका

विषय	पेज न.
दसवेयालियसुत्तं (दशवैकालिक सूत्र)	7
पुच्छिंसुणं	11
उववाई-सूत्र की बाईस गाथाएँ	14
25 बोल, लघुदण्डक, समिति गुप्ति	16
श्रावक प्रतिक्रमण	16
सूझता-असूझता	17
सचित्त-अचित्त	23
अस्वाध्यायिक	36

दसवेयालियसुत्तं (दशवैकालिक सूत्र)*

पढमं दुमपुप्फियऽज्झयणं

धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।1।।

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं।।2।।

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया।।3।।

वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा।।4।।

महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो।।5।। त्ति बेमि।

॥ पढमं दुमपुप्फियऽज्झयणं समत्तं॥१॥

बिइयं सामण्णपुव्वगऽज्झयणं

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ?।।1।।

वत्थ-गंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइ त्ति वुच्चइ।।2।।

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विप्पिट्ठि कुव्वई।
साहीणे चयई भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई।।3।।

* दशवैकालिक सूत्र (संशोधित)

समाए पेहाए परिव्वयंतो, सिया मणो नीसरई बहिद्धा।
न सा महं नो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं।।4।।

आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए।।5।।

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे।।6।।

धिरत्थु ते जसोकामी, जो तं जीवियकारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।।7।।

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर।।8।।

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दच्छसि नारिओ।
वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठियप्पा भविस्ससि।।9।।

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ।।10।।

एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसोत्तिमो।।11।। त्ति बेमि।

॥ बिइयं सामण्णपुव्वगऽज्झयणं समत्तं॥२॥

तइयं खुड्डियायारकहऽज्झयणं

संजमे सुट्ठियप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं।
तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।।1।।

उद्देसियं कीयगडं, नियागं अभिहडाणि य।
राइभत्ते सिणाणे य, गंध मल्ले य वीयणे।।2।।

सन्निही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए।
संबाहण दंतपहोवणा य, संपुच्छण देहपलोयणा य।।3।।

अट्ठावए य नाली य, छत्तस्स य धारणट्ठाए।
तेगिच्छं पाहणा पाए, समारंभं च जोइणो।।4।।

सेज्जायरपिंडं च, आसंदी पलियंकए।
गिहंतरनिसेज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य।।5।।

गिहिणो वेयावडियं, जा य आजीववित्तिया।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि य।।6।।

मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अणिव्वुडे।
कंदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए।। 7।।

सोवच्चले सिंधवे लोणे, रुमालोणे य आमए।
सामुद्दे पंसुखारे य, कालालोणे य आमए।।8।।

धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्म विरेयणे।
अंजणे दंतवणे य, गायाभंग विभूसणे।।9।।

सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं।
संजमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं।।10।।

पंचासवपरिन्नाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो।।11।।
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवंगुता।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया।।12।।
परीसहरिऊदंता, धुयमोहा जिइंदिया।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो।।13।।
दुक्कराइं करेत्ता णं, दूसहाइं सहेत्तु य।
केइत्थ देवलोगेसु, केइ सिज्झंति नीरया।।14।।
खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुड।।15।। त्ति बेमि।।।

॥ तइयं खुड्डियायारकहऽज्झयणं समत्तं॥३॥

पुच्छिसुणं

(गणधर सुधर्मा स्वामीकृत)

पुच्छिसुणं समणा माहणा य, अगारिणो या पर-तित्थया य।
से के इणेगंतहिय धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए।।1।।
कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं णायसुयस्स आसी।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहा णिसंतं।।2।।
खेयण्णए से कुसले महेसी, अणंतणाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि।।3।।
उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख-पण्णे, दीवे व धम्मं समियं उदाहु।।4।।
से सव्वदंसी अभिभूयणाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ।।5।।
से भूइपण्णे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोय-णिंदे व तमं पगासे।।6।।
अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपण्णे।
इंदे व देवाण महाणुभावे, सहस्सणेया दिवि णं विसिट्ठे।।7।।
से पण्णया अक्खयसागरे वा, महोदही वा वि अणंतपारे
अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुइमं।।8।।
से वीरिएणं पडिपुण्णवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालए वासि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए।।9।।

सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते।
से जोयणे णव-णवइ सहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं।।10।।

पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमि-वट्ठिए, जं सूरिया अणुपरि-वट्टयंति।
से हेमवण्णे बहुणंदणे य, जंसि रइं वेदयंति महिंदा।।11।।

से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठवण्णे।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरिवरे से जलिए व भोमे।।12।।

महीए मज्झंमि ठिए णगिंदे, पण्णायते सूरिए सुद्ध लेसे।
एवं सिरीए उ स भूरि-वण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली।।13।।

सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स।
एतोवमे समणे णायपुत्ते, जाइ-जसो-दंसण-णाण-सीले।।14।।

गिरिवरे वा णिसहाययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं।
तओवमे से जगभूइपण्णे, मुणीण मज्झे तमुदाहु पण्णे।।15।।

अणुत्तरं धम्म-मुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइं।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिदु एगंतवदातसुक्कं।।16।।

अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता।
सिद्धिं गइं साइ-मणंत पत्ते, णाणेण सीलेण य दंसणेण।।17।।

रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवण्णा।
वणेसु वा णंदण-माहु सेट्ठं, णाणेण सीलेण य भूइपण्णे।।18।।

थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे।
गंधेसु वा चंदण-माहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिण्ण-माहु।।19।।

जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, णागेसु वा धरणिंद-माहु सेट्ठे।
खोओदए वा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते।।20।।

हत्थीसु एरावण-माहु णाए, सीहो मियाणं सलिलाण गंगा।
पक्खीसु वा गरूले वेणुदेवे, णिव्वाणवादीणिह णायपुत्ते।।21।।

जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु।
खत्तीण सेट्ठे जह दंत-वक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे।।22।।

दाणाण सेट्ठं अभय-प्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।
तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते।।23।।

ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
णिव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी।।24।।

पुढोवमे धुणइ विगयगेही, ण सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे।
तरिउं समुद्दं व महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू।।25।।

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पावं ण कारवेइ।।26।।

किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम दीहरायं।।27।।

से वारिया इत्थि सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं।।28।।

सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं, समाहियं अट्ठपदो व सुद्धं।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति।।29।।

-----●-----

उववाई-सूत्र की बाईस गाथाएँ

कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया?।
कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ।।1।।

अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इह बोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झइ।।2।।

जं संठाणं तु इहं भवं, चयंतस्स चरिमसमयंमि।
आसी य पएसघणं, तं संठाणं तहिं तस्स।।3।।

दीहं वा हस्सं वा जं, चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।
तत्तो तिभागहीणा, सिद्धाणोगाहणा भणिया।।4।।

तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वो।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया।।5।।

चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिम ओगाहणा भणिया।।6।।

एक्का य होइ रयणी, साहीया अंगुलाइँ अट्ठ भवे।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्ण ओगाहणाए भणिया।।7।।

ओगाहणाए सिद्धा, भवत्तिभागेण होंति परिहीणा।
संठाण-मणित्थंथं, जरामरणविप्पमुक्काणं।।8।।

जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का।
अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते।।9।।

फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहिँ णियमसो सिद्धो।
ते वि असंखेज्जगुणा, देसपएसेहिँ जे पुट्ठा।।10।।

असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागार-मणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं।।11।।

केवलणाणुवउत्ता, जाणंती सव्वभावगुणभावे।
पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठीहिऽणंताहिं।।12।।

णवि अत्थि माणुसाणं, तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं।
जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं।।13।।

जं देवाणं सोक्खं, सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं।
ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंताहिँविग्गवग्गूहिं।।14।।

सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोणंतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा।।15।।

जह णाम कोइ मिच्छो, णगरगुणे बहुविहे वियाणंतो।
ण चएइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए।।16।।

इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं।
किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं।।17।।

जह सव्वकामगुणियं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई।
तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो।।18।।

इय सव्वकालतित्ता, अतुलं निव्वाण-मुवगया सिद्धा।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता।।19।।

सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगयत्ति य परंपरगयत्ति।
उम्मुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असंगा य।।20।।

णिच्छिण्ण-सव्व-दुक्खा, जाइ-जरा-मरण-बंधण-विमुक्का।
अव्वाबाहं सुक्खं, अणुहोंती सासयं सिद्धा।।21।।

अतुल-सुह-सागर-गया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता।।22।।

-----●-----

25 बोल, लघुदण्डक, समिति गुप्ति

25 बोल, लघुदण्डक, समिति गुप्ति के लिए श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा प्रकाशित तत्व का ताला ज्ञान की कुंजी भाग-1 (संस्करण सन् 2010 या इसके पश्चात् प्रकाशित) देखें।

-----●-----

श्रावक प्रतिक्रमण

श्रावक प्रतिक्रमण सार्थ के लिए श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा प्रकाशित प्रतिक्रमण सूत्र (संशोधित संस्करण सन् 2012 या इसके पश्चात् प्रकाशित) देखें।

-----●-----

सूझता-असूझता

1. घर संबंधी व्यक्ति घर में या घर के परिवार में असूझता हो और भिक्षार्थ मार्ग देने हेतु हटे तो घर असूझता समझना। सामान्य कोई भी असूझता व्यक्ति (दूध वाला आदि) घर के बाहर सम्मानार्थ मार्ग देवे तो घर असूझता नहीं समझना।

2. जो व्यक्ति वर्तमान में असूझता हैं (सचित्त पानी, अग्नि, वनस्पति आदि से स्पृष्ठ हैं) वह घर में या घर के सामने गोचरी हेतु आमंत्रित करे, बहराने के लिए इशारा करे या बोले, बहराने हेतु प्रवृत्ति करे तो घर असूझता समझना। घर से कहीं दूर कोई असूझता व्यक्ति अपने घर में गोचरी हेतु पधारने के लिए भावना भावे तो घर असूझता नहीं समझना।

3. चारित्र आत्माओं का घर में पधारना हुआ उस समय जो व्यक्ति असूझता था या उसके बाद असूझता हो गया लेकिन वर्तमान में असूझता नहीं हैं (सचित्त जल या अग्नि या वनस्पति आदि से अस्पृष्ठ हैं) तो भी वह गोचरी बहरा नहीं सकता, बहराने की प्रवृत्ति करे तो घर असूझता समझना लेकिन जो वर्तमान में असूझता नहीं हैं वह इशारा करे या बोले तो घर असूझता नहीं समझना। बशर्ते कि वह व्यक्ति बोलने के लिए ही असूझता से सूझता न हुआ हों।

4. घर के अगले हिस्से में दुकान हो तो घर असूझता होने पर दुकान असूझती नहीं समझना एवं दुकान असूझती हो तो घर असूझता नहीं समझना।

5. साधु के निमित ताले में चाबी लगाकर ताला खोलने पर उस वक्त अन्दर की वस्तु बहराना नहीं किन्तु घर असूझता नहीं समझना।

6. पलेण्डा एक हो अर्थात् पानी एक साथ रहता हो एवं चौके अलग-अलग हो वैसी स्थिति में एक चौके में एक दिन तथा दूसरे चौके में दूसरे दिन गोचरी की जा सकती है बशर्ते दोनों दिन पानी न लिया जाए। पानी लेने की स्थिति में एक ही दिन सब चौके फरसे जा सकते हैं। अगले दिन नहीं।

7. मुनि ने घर में प्रवेश किया उस समय जो व्यक्ति असूझता था (फ्रीज आदि से स्पर्श) लेकिन बाद में स्वाभाविक रूप से सूझता हो गया (फ्रीज से अलग आदि) तो उस व्यक्ति को जो वर्तमान में सूझता हैं यदि कोई दूसरा व्यक्ति स्पर्श करे तो उस दूसरे व्यक्ति को असूझता नहीं समझना। उससे आहार पानी लिया जा सकता है।

8. बहराने की प्रक्रिया में कोई त्रस जीव मर जावे या घायल हो जावे तो घर असूझता समझना। सातवें मास से अधिक काल की गर्भवती स्त्री बहराने हेतु उठे या बैठे तो घर असूझता समझना। चलने में असूझता नहीं समझना।

9. साधु-साध्वियों द्वारा आहारादि की गवेषणा में पूछे जाने पर झूठ नहीं बोलते हुए जो बात जैसी है, वैसी कहना।

10. नित्य भोजन के लिए बैठने के पश्चात् कम से कम एक मिनट सुपात्र दान की भावना भाना।

11. साधु-साध्वी को बहराने के लिए भोजन, चाय, जूस आदि नहीं बनाना। साधु के लिए राख डालकर 2-4 बर्तन धोकर, गर्म करके अचित्त पानी नहीं बनाना। घर में सहज राख से बर्तन धुलतें हों तो वह निर्दोष पानी रखने में दोष नहीं। सहज में ही कम से कम एक समय के बर्तन राख से मांजने चाहिये। साधु के बैठने के लिए पाट आदि बनवाकर या खरीदकर नहीं देना। साधु के भाव से

स्थानक व कमरा नहीं बनवाना। (श्रावकों के धर्म-ध्यान के लिये बनाया गया कमरा निर्दोष होता है।)

12. साधु-साध्वी के भाव से कोई भी वस्तु खरीदकर, बनाकर, सामने (टिफिन) ले जाकर, गैस बन्द कर, इधर-उधर से साधु के बिना देखे उतारकर व झूठ बोलकर नहीं देना।

13. घर में बहराने योग्य निर्दोष वस्तुओं को हमेशा सचित्त वस्तु के संघट्टे से अलग रखने का रिवाज रखना। जैसे-रोटी का डिब्बा मसाले दानी पर नहीं रखना। सारा भोजन डाइनिंग टेबल पर नहीं रखना। गैस का सिलैण्डर, पाइप, पानी की टंकी, आटे की कोठी, हरी सब्जी आदि से दूर रखना। गैस चालू करना हो तो उस पर पहले से तैयार अचित्त वस्तु निर्दोष स्थान पर रखना। सचित्त, अचित्त वस्तुओं को एक अलमारी, एक टेबल व एक कागज पर नहीं रखना।

14. सचित्त के संघट्टे से युक्त अचित्त वस्तुओं को साधु के भाव से अलग नहीं करना। परन्तु जब अचित्त वस्तु स्वयं के कोई प्रयोजन से उठाने का काम पड़े तो वापस असूझती नहीं रखना, योग्य निर्दोष स्थान पर रखना जिससे कभी भी अचानक साधु-साध्वी पधार जायें तो सभी वस्तुएँ सहज सूझती मिले। ऐसा विवेक रखना तथा घर के सभी सदस्यों, नौकर आदि को सुपात्र दान का विवेक दिलाना।

15. कूलर में बैठे हुए, सैल की घड़ी पहने हुए और सभी प्रकार की सचित्त वस्तु के संघट्टे में रहे व्यक्ति को बहराने के लिए आना नहीं तथा किसी को बुलाने भी नहीं जाना। आवाज भी नहीं देना। केवल विनय के लिए खड़े हो सकते हैं। परन्तु नजदीक तो (वन्दन के लिए भी) आना ही नहीं।

16. भोजन करते समय सुपात्र दान की भावना रखना और

सचित्त वस्तु से अलग बैठना तथा बनती कोशिश डाईनिंग टेबल पर बैठकर नहीं खाना।

17. सुपात्र दान की भावना होवे तो सैल की घड़ी नहीं पहनना। घर के सदस्यों को भी विवेक दिलवाना।

18. घर में सचित्त वस्तुओं का कार्य करते समय रास्ते के बीच में बिखेर कर नहीं बैठना जिससे साधु-साध्वी अचानक आ जाये तो सहज रास्ता रहे।

19. गोचरी के समय में घर का दरवाजा अन्दर से बन्द नहीं रखना। उस समय पौंचा लगाना, आँगन धोना आदि नहीं करना।

20. घर पर आते हुए साधु-साध्वी को देखकर भागना नहीं। अन्दर सूचना देना नहीं, अन्दर मालूम पड़े ऐसा संकेत शब्द आदि करना नहीं, कोई वस्तु (झाड़ू, पेपर, कपड़ा आदि) हो तो फैंकना नहीं। सचित्त के संघटे में रखना नहीं। नीचे रास्ते में पड़ी वस्तुएँ जूते आदि को इधर-उधर धकेलना नहीं।

21. सचित्त के संघट्टे में रहा व्यक्ति रास्ते में खड़ा हो, बाहर जा रहा हो तो साधु-साध्वी को रास्ता देने के लिए इधर-उधर खिसकना नहीं, पीछे मुड़ना नहीं, आमने-सामने आ जावे और रास्ता संकड़ा हो तो एकदम हटना नहीं बल्कि खड़े रहना (साधु-साध्वी पीछे हटकर रास्ता दे देंगे।

22. बहराने के लिए चलता हुआ व्यक्ति रास्ते में सचित्त से दूर रहना, लटकते हुए कपड़े आदि को छूना नहीं। कोई वस्तु में फूँक देना नहीं, किसी को संकेत देने के लिए चुटकी, ताली आदि बजाना नहीं। खड़े-खड़े हाथ झटकना नहीं। घुटने के ऊपर से कोई भी वस्तु, भाप की बूँदें, चीने के कण मात्रा भी गिराना नहीं।

23. साधु को बहराने के लिए चम्मच, कटोरी, प्लेट, हाथ आदि नहीं बिगाड़ना तथा आँगन धोना पड़े इस तरह की वस्तु गिराते हुए नहीं बहराना।

24. बहराने के बाद अगर वस्तु कम पड़ जाए तो ऊणोदरी कर लेना परन्तु नया आरम्भ नहीं करना।

25. सभी प्रकार के इलैक्ट्रिक के साधन, फोन, मोबाइल, कैलकुलेटर, सैल की घड़ी, बैटरी, प्रेस आदि चालू हो, कूलर की हवा जहाँ तक फैलती हो, वहाँ कमरे में बैठे व्यक्ति, शरीर या बाल गीलें हों, कपड़े गीलें हों, बरसात का पानी, फ्रीज, बर्फ, पीसी हुई चटनी में बीज हो, मिर्ची, नींबू आदि का ताजा अचार जो गला नहीं है (आठ दिन के पहले का), धोये हुए गीले बर्तन तथा सातवें व्रत में बताई गई वस्तुएँ सचित्त होती हैं अतः इनसे दूर रहकर या बिना छुए बहराना।

26. किसी की गलती से घर असूझता हो जाने पर कषाय नहीं करना, विवेक बढ़ना।

27. किसी भी प्रकार की भौतिक लालसा रखे बिना निर्जरा की भावना व निष्काम बुद्धि से बहराना। ईर्ष्या व अहंकार से नहीं बहराना। किसी भी वस्तु को जबर्दस्ती बहराने की कोशिश नहीं करना। बिना पूछे चुपके से कोई भी वस्तु पात्र में नहीं डालना।

28. असूझता हो जाने पर भी, कुछ ना कुछ ले जाओ, खाली मत जाओ, हमारा दिल दुःखता है, नहीं तो हम स्थानक में नहीं आयेंगे आदि निरर्थक शब्द नहीं बोलना। अंतराय समझकर आगे के लिए विवेक बढ़ाना।

29. जैन साधु के वेश में रहने वाले को अपने हाथ से कोई

भी अकल्पनीय वस्तु, रूपये-पैसे दूषित आहार-पानी आदि कभी भी किसी भी स्थान पर नहीं देना।

30. साधुओं की प्रेरणा से पैसा, चंदा आदि नहीं देना।

31. दूध उबल रहा हो, रोटी जल रही हो, पानी की बाल्टी भर गई हो, तेल जल रहा हो और साधु-साध्वी आ जाए तो अपना काम बिगाड़ना नहीं, आरम्भ बढ़ाना नहीं। कच्ची वस्तु पहले उतारना नहीं, गैस बन्द करना नहीं, जो काम जिस ढंग से करना हो, उसमें एतराज नहीं, दूसरा व्यक्ति बहरा सकता है।

32. किसी भी साधु-साध्वी की लाचारी से, बीमारी आदि में सदोष दवा आदि माँगने पर, देना पड़े तो स्पष्ट सही बोलकर देने का आगार। निर्दोष गवेषणा करने वाले व सदोष नहीं लेने वाले को गलत बोलकर नहीं देना। भूल-चूक आगार।

33. साधुओं को मोबाइल, लेपटॉप आदि इलेक्ट्रॉनिक सामान माँगने पर भी नहीं देना।

34. साधु-साध्वी को विहार में निर्दोष आहार-पानी की दलाली करना।

35. यदि बहराते समय असूझता हो जावे तो उस रोज के लिए अपनी प्रिय वस्तु में एक वस्तु के सेवन का त्याग करना।

36. घर में सचित्त-अचित्त चीजों में एक अलमारी में एक कागज पर एक साथ नहीं रखने का ध्यान रखना।

37. घर में जो अचित्त पानी बनता है (जैसे चावल, दाल आदि धोने वाला पानी, कूकर का पानी) उसे तत्काल नहीं फेंकने का ध्यान रखना।

-----●-----

सचित्त-अचित्त

पृथ्वीकाय (सचित्त)

1. रंगोली
2. खड़ी (चुना जैसे होता है और मकान बनाने में काम आता है।)
3. पानी में भीगी खड़ी
4. सुखी मुलतानी मिट्टी
5. पानी में डाली हुई मुलतानी मिट्टी
6. काली मिट्टी
7. पीली मिट्टी
8. चार अंगुल नीचे की खुदाई
9. तेज आंधी तूफान में उड़कर आने वाली मिट्टी
10. हिंगलु
11. हड़ताल
12. पत्थर का भीतरी भाग
13. भूमि का भीतरी भाग
14. हीरे का भीतरी भाग
15. फर्श का भीतरी भाग
16. पत्थर का टुकड़ा टूटने पर बीच का भाग
17. घिसाई किया जाता हुआ पत्थर
18. घिसते हुए पत्थर का पाउडर
19. तत्काल खदान से निकला पत्थर
20. तत्काल खदान से निकली धातु
21. भोडर की राख

22. सफेद नमक
23. सेंधा नमक
24. सिके हुए नमक में पानी छूट गया हो तो
25. पाटी पर लिखने वाली कलम (बरता / Slate Pencil)
26. तालाब के किनारे की जमी पपड़ी।

पृथ्वीकाय (अचित्त)

1. गुलाल
2. सिन्दूर
3. पाउडर
4. रंगीन कलम
5. सचित्त - मिट्टी पर यातायात आवगमन होने पर
6. लकड़ी का कोयला
7. काला नमक
8. सिका नमक
9. काले नमक में पानी छूटने पर भी अचित्त
10. चिप्स पर डाला नमक
11. चॉक (Chalk)

नोट :- चॉक अचित्त होता है और बरता सचित्त होता है।

अप्काय (सचित्त)

1. बारिश का पानी
2. नल का पानी

3. तालाब का पानी
4. हैण्डपम्प का पानी
5. ओस का पानी (बूंदे)
6. कुए का पानी
7. चूने का पानी
8. बर्फ का पानी
9. बर्फ का लड्डू
10. पैप्सी (Ice-Candy)
11. दीवार से निकलने वाला पानी
12. धोवन पानी (5 प्रहर पश्चात्)
13. धोवन पानी पन्द्रह मिनिट पहले
14. डिस्टिल वाटर, इन्जेक्शन
15. गर्म पानी (वर्षाकाल में 3 प्रहर के बाद, शीतकाल में 4 प्रहर के बाद, ग्रीष्मकाल में 5 प्रहर के बाद)
16. कच्चे नारियल (डाभ) का पानी (बिना कुछ डाले)
17. आटा गूंदते समय यदि उसमें सचित्त (कच्चा) पानी गया है
18. फ्रीजर में अंदर बर्तन पर जमी बर्फ या पानी

अप्काय (अचित्त)

1. धोवन पानी संभवतया 15 मिनिट बाद
2. गर्म पानी (वर्षा, सर्दी, गर्मी में क्रमशः 3, 4, 5 प्रहर तक)
3. साजी का पानी (चाहे कितने भी दिनों का हो)
4. पके नारियल का पानी बाहर निकालने पर

5. कच्चे नारियल के पानी में (शक्कर आदि कुछ डाला हुआ हो)
6. दूध के बर्तन को धोया हुआ पानी
7. आटे की परात आदि बर्तन धुला पानी
8. चावल, दाल, पोहा आदि धान्यों का धुला पानी
9. भाप
10. बर्तन के अन्दर ठण्डी वस्तु को रखने पर बर्तन के बाहर आने वाला पानी। (जो वातावरण की भाप का परिवर्तित रूप है)

ज्ञातव्य :- 1. सीलन (Moisture) का संघठा नहीं होता।
2. गीजर का पानी लेना नहीं किन्तु संघटा नहीं टालना।

तेउकाय (सचित्त)

1. अग्नि
2. भोभर
3. अंगारा
4. विद्युत (Electricity)
5. जलता दीपक
6. जलता धूप
7. लोभान, जलती हुई मोमबत्ती
8. जलती हुई अगरबत्ती
9. जलती हुई तीली
10. चालू फ्रीज
11. चालू टार्च
12. चालू केलक्यूलेटर

13. चालू टी.वी. रिमोट (In Operation)
14. चालू गैस लाइटर
15. चलती गाड़ी
16. बैट्री से चलने वाली घड़ी (सैल घड़ी)
17. कम्प्यूटर (हर समय)
18. गाड़ी का रिमोट (जब चालू हो)
19. सौर (Solar) कुकर जब चालू हो
20. सभी प्रकार के इलेक्ट्रिक उपकरण चालू हालत में।
21. सौर ऊर्जा से संचालित वस्तुऐं चालू हालत में।

तेउकाय (अचित्त)

1. राख
2. सूर्य ताप
3. टी. वी. जब बंद हो
4. टार्च जब बंद हो
5. केलक्यूलेटर जब बंद हो
6. गैस लाइटर जब बंद हो
7. प्लग लगा हो पर स्विच ऑन नहीं हो
8. सौर कुकर जब बंद हो।

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
1.	बादाम (Almond)	टुकड़ा, साबुत, ठंडे पानी में भीगा हुआ एवं जिसके दो टुकड़े न किये हों।	पीसा हुआ, तेज गर्म पानी में भीगा हुआ जिसके सीधे दो फाड़ है अथवा नुक्का रहित भाग, नमकीन (Flavoured)
2.	खुरमानी (Apricot)	बीज सहित	बीज रहित
3.	काजू (Cashewnut)	–	अचित्त
4.	खजूर (Dates)	बीज सहित	बीज रहित
5.	अंजीर (Figs)	साबुत, भीगी हुई (Milk Shake) बिना उबला हुआ	शस्त्र परिणत – जैसे दूध में उबली हुई पका हुआ
6.	अखरोट (Walnuts)	छिलके सहित	टुकड़ा
7.	मूंगफली (Peanuts)	कच्ची मूंगफली	सिकी हुई, उबली हुई, पीसी हुई आदि
8.	पिस्ता (Pistacho)	कच्चा/बिना सिका हुआ	नमकीन, सिका हुआ
9.	किशमिश (Raisins)	सूखी, भिगाई हुई	शस्त्र परिणत – सेकी हुई, उबली हुई
10.	केसर (Saffron)	–	हर प्रकार से
11.	चिरौंजी	साबुत	सिकी हुई

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
12.	बीज (सुखे, गीले)	खरबूज, तरबूज आदि सभी प्रकार के बीज	तले, उबले, सेंके हुए
13.	सुपारी	बड़ी सुपारी (छायली अखण्ड सुपारी) जैसे साते की कच्ची सुपारी	चिकनी सुपारी, मीठी सुपारी, छायली सुपारी (उबली हुई)
14.	मुन्नका	बीज सहित	बीज रहित/शस्त्र परिणत
15.	खारक	बीज सहित	बीज रहित
16.	मुरब्बा	–	आंवला, बेल, सेवफल बेर आदि सभी प्रकार के मुरब्बे
17.	फिटकरी	–	अचित्त
18.	सौंफ	साबुत, कच्ची	सेकी, पीस कर छाना हुआ
19.	हींग	–	अचित्त (सूखी, गीली)
20.	तुलसी	हरी पत्ती	सूखी
21.	तेजपत्ता	–	अचित्त
22.	जीरा	साबुत	सेका, पिसा हुआ

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
23.	राई	साबुत	पिसा, सेका, छोंक में दिया हुआ
24	सादा नमक, सैंधा नमक	सादा व सेका हुआ नमक पानी छोड़ने पर	सेका हुआ
25.	काला नमक	–	अचित्त
26	अजवाइन	दाने	सिकी हुई, पीसकर कपड़े से छानी हुई
27	दालचीनी	–	अचित्त
28	सूखी लाल मिर्ची	साबुत, टुकड़ा	पिसी हुई
29	मिर्च पाउडर	–	अचित्त (छनी हुई)
30	सूखा धनिया	साबुत, आधा टुकड़ा	पिसा और छना हुआ
31	नींबू का सत	–	अचित्त
32	लौंग	–	अचित्त
33	मेथी भाजी	हरी पत्ती	सूखीपत्ती (पाना मेथी)
34	दाना मेथी	साबुत, भीगी हुई, कच्ची	पिसी हुई, पचाई हुई, उबली हुई
35	सौंठ	–	पाउडर, गांठिया

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
36	सोने/चांदी का वरक	–	अचित्त
37	गूंद	–	अचित्त
38	शहद	–	अचित्त
39	मुलेठी	–	टुकड़ा, पिसा हुआ
40	पीपरामूल	–	अचित्त
41	तालमकाणा	–	अचित्त
42	गुड़	–	अचित्त, रात में पानी में भीगा हुआ भी
43	शक्कर, चीनी, मिश्री, बूरा	–	अचित्त
44	अमचूर	–	टुकड़ा, पिसा हुआ
45	जायफल	साबुत	घिसा हुआ, पिसा हुआ, पचाया हुआ
46	अनारदाना	गीला, सूखा	पिसा हुआ
47	खस–खस	कच्चा दाना	सिका हुआ
48	तिल	कच्चा दाना	सिका हुआ

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
49	इमली	साबुत, बीज सहित, कच्ची	बीज रहित पकी इमली
50	हल्दी	गीली/हरी हल्दी	सूखी, पिसी हुई
51	इलायची	साबुत, दाने	सिकी हुई, पाउडर, चाशनी वरक लगी हुई
52	पीपर	साबुत	सिकी हुई, पीसी हुई (कपड़ा छान)
53	हरड़	बड़ी हरड	छोटी हरड़
54	भुकी/चूरी	–	अचित्त
55	कायफल	–	अचित्त
56	कांगणी (राजगिरी–राजगिरा)	दाने	लड्डू, चक्की, आटा
57	मूसली	गीली	सूखी
58	काली मिर्च	साबूत	पाउडर, टुकड़ा (या दरदरा किया हुआ)
59	चन्दन	–	अचित्त
60	चावल	(छिलका सहित)	छिलके निकले (कच्चे दाने, पके हुए)

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
61	साबुदाना	–	अचित्त
62	मुरमरा (मामरा) साफ किया हुआ	–	अचित्त
63	दाल (छिलका, बिना छिलका)	–	अचित्त
64	साबुत चना, मोंठ, मूंग, मसूर, राजमा आदि सभी	सचित्त	पकाया हुआ
65	पिसा हुआ आटा	बिना छाना हुआ	छाना हुआ
66	कंद, मूल	कच्चा	पका हुआ
67	फूल	हरे, कच्चे, बीज सहित गेंदे का सूखा फूल बीज सहित	सूखी हुई पंखुडिया, बीज रहित गुदा भाग
68	फल	कच्चे, पके हुए बीज सहित	बीज रहित गुदा भाग
69	बीज/गुठली	गीला, सूखा, भीगा हुआ	पकाया हुआ, पिसा हुआ
70	कच्ची प्रत्येक वनस्पति का ज्यूस	बिना छाना	बारीक कपड़े से छाना हुआ (निकलने के 20 मिनट बाद)

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
71	कंद, मूल, साधारण वनस्पति का ज्यूस	शस्त्र अपरिणत (छना हुआ या अनछना हुआ)	शस्त्र परिणत अर्थात् उबला हुआ या नमक, ग्लूकोस, शक्कर आदि मिलाया हो (मिलाने के 20 मिनट बाद)
72	छिलके	सभी हरी सब्जी के छिलके	पके हुए फलों के छिलके
73	अचार (Pickle)	अचार डालने के आठ दिन तक, नींबू का अचार जब तक छिलका न गले	आठ दिन के पश्चात् का अचार/ नींबू का छिलका गल जाने पर
74	केला	कच्चा	पका
75	अन्नानास	कांटे सहित	कांटे रहित
76	पके फलों का ज्यूस	बीज सहित	बीज रहित (छाना हुआ), बीज सहित ज्यूस निकाले तो 20 मिनट बाद
77	अंगूर	साबुत, गर्म पानी से निकाला हुआ	शस्त्र परिणत–सब्जी बनी हुई, पूरा उबला हुआ
78	भुट्टा	सिका हुआ (मिश्र की शंका), दाने साबुत, छिले हुए	उबला हुआ, पका हुआ, दाने निकाल के सिके हुए
79	सिंघाडे	साबुत, छिले हुए	उबले हुए
80	पका नारियल	बीज सहित, कच्चे पानी से धोया हुआ	बीज रहित नारियल के टुकड़े व पानी

क्र.स.	वस्तु	सचित्त	अचित्त
81	कच्चा नारियल (डाब)	पानी, मलाई पानी अचित्त	शस्त्र परिणत–शक्कर आदि से (20 मिनट बाद)
82	कच्चा दूध	–	अचित्त
83	हलकी फ्राइ की हुई सब्जियाँ	सचित्त	–
84	मक्खन	–	अचित्त
85	गेंहूँ	साबुत	छाना हुआ आटा
86	चावल का आटा	–	अचित्त
87	गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरी, मक्का इत्यादि	साबुत	छना हुआ आटा, दलिया
88	सभी प्रकार की हरी सब्जी सुधारी हुई, कचूमर, सलाद	सचित्त	पकी हुई सब्जी
89	स्टॉबेरी	साबूत, सुधारी हुई (Milk Shake टुकड़े सहित)	ज्यूस कपड़ा छाना हुआ (20 मिनट बाद)
90	नींबू का टुकड़ा बीज रहित	–	अचित्त
91	पापड़ खार	–	अचित्त

अस्वाध्यायिक

निम्नलिखित बत्तीस अस्वाध्यायिक के कारणों को टालकर स्वाध्याय करना चाहिए।

क्र.	नाम	अंतरिक्ष संबंधी 10 अस्वाध्यायिक	काल मर्यादा
1.	उल्कापात	रेखायुक्त (पीछे पूँछ के समान) या प्रकाश युक्त तारे का गिरना	एक प्रहर तक
2.	दिग्दाह	किसी दिशा में महानगर जलने के समान ऊपर प्रकाश नीचे अधंकार दिखाई देना	एक प्रहर तक
3.	गर्जित	मेघ गर्जना होना	दो प्रहर तक
4.	विद्युत	बिजली चमकना	एक प्रहर तक

नोट:- सूर्य के साथ आर्द्रा नक्षत्र के योग से लेकर स्वाति नक्षत्र के योग होने तक मेघ गर्जना और बिजली चमकना संबंधी अस्वाध्यायिक नहीं माना जाता। आर्द्रा नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र का काल तारीख के हिसाब से 21 जून से 25 अक्टूबर के लगभग होता है।

5.	निर्घात	बादल के होने पर या न होने पर व्यन्तर कृत महागर्जना के समान ध्वनि का होना। वर्तमान में बिजली कड़कना/गिरना इसके अन्तर्गत माना जाता है।	आठ प्रहर तक
6.	यूपक	शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया को रात्रि की प्रथम पौरुषी पर्यन्त। ये पक्खी के बाद की तीन रात्रियाँ समझना, चाहे पक्खी चतुर्दशी की हो या अमावस्या की।	प्रहर रात्रि तक
7.	यक्षादीप्त	आकाश में एक दिशा में बीच-बीच में (एक-एक कर) व्यन्तर (देवता) कृत विद्युत् के समान प्रकाश होना	एक प्रहर तक
8.	धूमिका	काली धूँवर (अंधकार युक्त, धूँए के समान) का आना	जब तक रहे
9.	महिका	श्वेत धूँवर का आना	जब तक रहे
10.	रज उद्घात	चारों दिशाएँ धूल से भर जाने पर सब ओर अंधकार जैसा दिखाई दे (चाहे वायु हो या न हो)	जब तक रहे

(दिग्दाह एवं यक्षादीप्त वर्तमान में कम दृष्टिगोचर होते हैं)

औदारिक संबंधी 10 अस्वाध्यायिक

11-13. हड्डी,
रक्त, माँस

''तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय संबंधी अस्वाध्यायिक''

●	रक्त सहित चर्म, रूधिर, माँस, अस्थि, अण्डा, अण्डे का कलल या पशु-पक्षी का शव आदि साठ हाथ के भीतर पड़े हो तो उपर्युक्त सभी जब से जीव रहित हुए तब से (चर्म, रूधिर, माँस आदि के रहने पर भी तीन प्रहर के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता)	तीन प्रहर तक
●	किसी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय (बड़ी कायवाले) की जहाँ घात (तिर्यञ्च या मनुष्य के द्वारा) हुई हो तो वहाँ चारों ओर साठ हाथ तक (कम से कम 3 प्रहर टालना आवश्यक है, चाहे सूर्योदय हो भी गया हो)	अगला सूर्योदय न होवे तब तक
●	साठ हाथ के भीतर जर वाले पशुओं की प्रसूति हो तो और जर गिरने के बाद	जर गिरे तब तक तीन प्रहर तक
•	साठ हाथ के भीतर बिना जर वाले पशुओं की प्रसूति के बाद	तीन प्रहर तक

''गर्भज मनुष्य संबंधी अस्वाध्यायिक''

- सौ हाथ के भीतर रक्त सहित चर्म, खून, माँस यदि पड़े हो तो ये पदार्थ जब से जीव रहित हुए, तब से (उसके बाद नहीं, चाहे वह पदार्थ वहाँ पड़ा हो या न हो) — आठ प्रहर तक
- जिस गली/गृहपंक्ति में से शव जब तक नहीं निकाला जाए तब तक उस गली/गृहपंक्ति में अस्वाध्यायिक रहता है।
- मनुष्य की हड्डी सौ हाथ के भीतर हो तो जब से जीव रहित हुई तब से (12 वर्ष के बाद अस्वाध्यायिक नहीं। 12 वर्ष के पहले ही यदि अस्थि जली हुई हो या वर्षा आने से धुल गई हो तो जलने व धूलने के बाद अस्वाध्यायिक नहीं रहता) — बारह वर्ष तक
- खून यदि विवर्ण हो गया हो यानि उसकी पर्याय/रंग बदल गया हो तो अस्वाध्यायिक नहीं होता

14. अशुचिसामन्त	मल, मूत्र, कलेवर आदि अशुभ पदार्थ	दिखाई दे या उनकी दुर्गन्ध आये
15. श्मशानसामन्त	श्मशान भूमि के चारों ओर	100-100 हाथ तक
16. चन्द्रग्रहण	चन्द्रग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 8 प्रहर और उत्कृष्ट 12 प्रहर तक
17. सूर्यग्रहण	सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहाँ	जघन्य 8 प्रहर और उत्कृष्ट 16 प्रहर तक

(विशेष स्पष्टता प्रतिवर्ष बनने वाले पक्खी पत्र में की जा सकती है)

18. पतन	प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री के कालगत हो जाने पर जिस क्षेत्र में वातावरण विक्षोभ हो तो	जब तक विक्षोभ रहे
19. राजव्युद्ग्रह	युद्ध भूमि के आसपास	जब तक युद्धजनित क्षोभ रहे
20. उपाश्रय में औदारिक शरीर	उपाश्रय की सीमा में तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय या मनुष्य का शव पड़ा रहे	जब तक शव पड़ा रहे तब तक
21-28. चार पूर्णिमा और इसके बाद की प्रतिपदा	आषाढ़, आश्विन, कार्तिक व चैत्र इन चारों पूर्णिमाओं को तथा इन पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदाओं को	दिन-रात

- जिस दिन पंचांग (कैलेण्डर) में पूनम व प्रतिपदा बताई हो उस दिन अस्वाध्यायिक मानना।
- यदि दो पूनम हो तो दोनों पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना, प्रतिपदा को नहीं।
- यदि दो प्रतिपदा हो तो प्रथम प्रतिपदा और पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।
- यदि पूर्णिमा क्षय हो तो चतुर्दशी और प्रतिपदा को अस्वाध्यायिक मानना।
- यदि प्रतिपदा क्षय हुई हो तो चतुर्दशी व पूर्णिमा को अस्वाध्यायिक मानना।

29-32. संधि समय	सूर्योदय एवं सूर्यास्त, मध्याह्न व अर्धरात्रि इन चार संध्यायों में	एक-एक मुहूर्त

(सूर्योदय एवं सूर्यास्त के पूर्व व पश्चात् आधा-आधा मुहूर्त और दिन व रात्रि के मध्य भाग के पूर्व व पश्चात् आधा-आधा मुहूर्त तक अस्वाध्यायिक माना जाता है।)

विशेष नोट-

- बालक-बालिका के जन्म के क्रमशः सात और आठ दिन तक 100 हाथ के भीतर अस्वाध्यायिक माना जाता है।
- **कालिक सूत्र**-11 अंग, 4 छेद तथा मूल सूत्र में एक उत्तराध्ययन सूत्र। उपांग सूत्र में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति, निरयावलिया पंचक (निरयावलिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचुलिया, वण्हिदसा)। शेष सभी **उत्कालिक सूत्र** है। किन्तु 32वां आवश्यक सूत्र **नोकालिक नोउत्कालिक सूत्र** है। कालिक सूत्र का स्वाध्याय दिन एवं रात्रि के प्रथम एवं अंतिम प्रहर में एवं उत्कालिक सूत्र का स्वाध्याय किसी भी समय अस्वाध्यायिक के कारणों को टालकर करना चाहिए। उत्काल में कालिक सूत्र की वाचना 9 गाथा से अधिक नहीं दी जा सकती।
- स्वाध्याय का वाचन करने के पश्चात् '**आगमे तिविहे**' का पाठ बोलें।
- एक प्रहर लगभग 3 घंटे का होता है।
- चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण जिस क्षेत्र में दिखे वहां अस्वाध्यायिक समझना।
- पका हुआ माँस अस्वाध्यायिक नहीं है।

-----●-----